संपादकीय

यूरोपीय यूनियनः महामारी और कड़वाहट

बेल्जियम की राजधानी ब्रसेल्स में चल रही यूरोपियन यूनियन की बैठक में जिस तरह के तीव्र मतभेद सामने आए हैं और जिन तीखे शब्दों के जरिये वे प्रकट हुए हैं, वह कोई सामान्य बात नहीं है। ईयू देशों की इस बैठक में और बातों के अलावा 1800 अरब यूरो (2100 अरब डॉलर) के बजट और रिकवरी फंड पर भी बहस चल रही है। कोविड-19 से जूझते जरूरतमंद पूर्वी-दक्षिणी यूरोपीय देशों के लिए रिकवरी फंड को जरूरी माना जा रहा है। सैद्धांतिक रूप से सभी देश इस पर सहमत भी थे, लेकिन जैसे ही बैठक शुरू हुई और उसमें फ्रांस तथा जर्मनी की ओर से यह प्रस्ताव रखा गया कि रिकवरी फंड (750 अरब यूरो) का अधिक से अधिक हिस्सा (500 अरब यूरो) महामारी से पीड़ित देशों को सहायता के रूप में दिया जाए, इस पर मतभेद उभरने लगे। दक्षिण यूरोपीय देश- इटली और स्पेन इसके पक्ष में थे, लेकिन फरूगल (कंजूस) फोर के नाम से जाने जा रहे चार देश- ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, स्वीडन और नीदरलैंड्स इसके तीव्र विरोध में सामने आ गए।

नीदरलैंड्स के प्रधानमंत्री मार्क रट ने साफ-साफ कह दिया कि अपनी संसद की मंजूरी के बगैर वे अपने देश पर कर्ज का कोई बोझ नहीं डाल सकते, वह भी इसलिए कि सदस्य देशों को कैश बांटना है! इस पर हंगरी के दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री विक्टर ओर्बान ने कहा कि मार्क रट पुराने कम्युनिस्ट शासकों जैसा आचरण दिखा रहे हैं। निजी टिप्पणियों से भरी यह तीखी बहस थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। विवाद रिकवरी फंड की मात्रा पर ही नहीं, उसके साथ जोड़ी जाने वाली शर्तों पर भी था। हाल यह रहा कि बैठक का समय बार-बार बढ़ाया जाता रहा, लेकिन सहमति की कोई सूरत बनती नजर नहीं आई। शनिवार को समाप्त होने वाली बैठक रविवार और फिर सोमवार को भी चलती रही, लेकिन आखिर तक इसमें शामिल नेता यह कहने की स्थिति में नहीं थे कि उनके बीच सहमति बन ही जाएगी।

लक्जमबर्ग के प्रधानमंत्री जेवियर बेटेल ने यहां तक कह दिया कि ईयू मीटिंग्स में शामिल होने के अपने सात साल के अनुभव में ऐसा तीखा मतभेद उन्होंने कभी नहीं देखा। बहरहाल, बैठक का अंत चाहे जैसा भी हो, इन चार दिनों में इसमें जो कुछ होता हुआ दिखा है वह इस मान्यता को ध्वस्त करने के लिए काफी है कि ब्रिटेन के अलग होने के बाद ईयू का सबसे बड़ा संकट खत्म हो गया और अब उसे शांति तथा सहमति से चलाना मुश्किल नहीं होगा। 1993 में ईयू का गठन राष्ट्रों की सीमाएं कमजोर पड़ने की दिशा में एक ठोस कदम माना गया था। दुनिया के एक ग्लोबल विलेज बनने के सपनों को इसने पंख लगा दिए थे। यूरोपीय संसद की यह बैठक अभी खत्म नहीं हुई है, लेकिन महामारी जैसे पहले वास्तविक संकट के सामने इसमें नजर आई कटुता उन सबके लिए तकलीफदेह है जो राष्ट्रों की सीमाओं में बंटी तनावग्रस्त दुनिया की जगह आपसी सहयोग, विश्वास और प्रेम से संचालित विश्व के सपने से जुड़ाव महसूस करते रहे हैं।

नीदरलैंड्स के प्रधानमंत्री मार्क रट ने साफ-साफ कह दिया कि अपनी संसद की मंजूरी के बगैर वे अपने देश पर कर्ज का कोई बोझ नहीं डाल सकते, वह भी इसलिए कि सदस्य देशों को कैश बांटना है! इस पर हंगरी के दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री विक्टर ओर्बान ने कहा कि मार्क रट पुराने कम्युनिस्ट शासकों जैसा आचरण दिखा रहे हैं। निजी टिप्पणियों से भरी यह तीखी बहस थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। विवाद रिकवरी फंड की मात्रा पर ही नहीं, उसके साथ जोड़ी जाने वाली शर्तों पर भी था। हाल यह रहा कि बैठक का समय बार-बार बढ़ाया जाता रहा, लेकिन सहमति की कोई सूरत बनती नजर नहीं आई। शनिवार को समाप्त होने वाली बैठक रविवार और फिर सोमवार को भी चलती रही, लेकिन आखिर तक इसमें शामिल नेता यह कहने की स्थिति में नहीं थे कि उनके बीच सहमति बन ही जाएगी।

अब आपके पैन और बैंक खाता पर रहेगी खुफिया एजेंसियों की नजर

नई दिल्ली (आरएनएस)। आयकर विभाग इंटिग्रेटेड काउंटर टैररिज्म प्लेटफॉर्म नेटग्रिड के तहत सीबीआई और एनआईए समेत 10 जांच और खुफिया एजेंसियों के साथ किसी भी इकाई का पैन और बैंक खाता समेत अन्य जानकारी साझा करेगा। एक आधिकारिक आदेश में यह कहा गया है। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने कहा कि परमानेंट अकाउंट नंबर, टैक्स डिडक्शन एंड कलेक्शन अकाउंट नंबर, बैंक खाते का ब्योरा, आयकर रिटर्न की जानकारी तथा स्रोत पर कर कटौती समेत द्विपक्षीय आधार पर सहमति वाली सूचना 10 एजेंसियों के साथ साझा की जाएगी। केंद्रीय एजेंसियों के साथ सूचना का नेशनल इंटेलिजेंस ग्रिड (नेटग्रिड) के जरिये आदान-प्रदान किया जाएगा। वास्तविक समय के आधार पर इमिग्रेशन, बैंक, व्यक्तिगत करदाताओं, हवाई और ट्रेन यात्रा जैसे आंकड़े और गोपनीय सूचनाओं तक पहुंच के साथ संदिग्धों का पता लगाने और आतंकवादी हमलों को रोकने को लेकर एक मजबूत व्यवस्था की परिकल्पना की गई है।

केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई), राजस्व खुफिया निदेशालय, प्रवर्तन निदेशालय, केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड, मंत्रिमंडल सचिवालय, खुफिया ब्यूरो (आईबी), जीएसटी खुफिया महानिदेशालय, मादक पदार्थ नियंत्रण ब्यूरो, वित्तीय खुफिया इकाई और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए)।

ये एजेसिंया पूर्व में की गई कानूनी व्यवस्था के तहत वास्तविक समय पर नेटग्रिड आंकड़ा प्राप्त करने के लिए अधिकृत हैं। आदेश के मुताबिक सीबीडीटी और नेटग्रिड ताजा सूचना साझा व्यवस्था को अंतिम रूप देने के लिये सहमति पत्र पर दस्तखत करेंगे।

कोरोना के कारण टाटा टेक्नोलॉजी में कर्मचारियों के एक बड़े हिस्से को भेजा गया छुट्टी पर

नईदिल्ली (आरएनएस)। टाटा टेक्नोलॉजी ने अपने कर्मचारियों का एक बड़ा हिस्सा कोरोना वायरस महामारी के चलते खाली बैठा रखा है। कंपनी ने कहा कि करीब 400 कर्मचारियों को पेड लीव पर खाली बैठाया हुआ है और कुछ को बिना सैलरी के छुट्टी पर भेज दिया है। टाटा टेक्नोलॉजी के प्रवक्ता ने कहा- बदली हुई परिस्थितियों के हिसाब से हम टाटा टेक्नोलॉजी को एक फुर्तीला, तुरंत एक्शन लेने वाला और फ्लेक्सिबल ऑर्गेनाइजेशन बनाना चाहते हैं। इसी के तहत हमने कुछ एक्शन लिए हैं, जिसमें कुछ कर्मचारियों को बेंच पर बैठाना (खाली बैठाना) भी शामिल है।

कंपनी के अनुसार कर्मचारियों नौकरी बनी रहेगी और उनके परिवार समेत उन्हें साल के अंत तक कंपनी की हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी में कवर किया जाएगा। नेशनल इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंप्लॉई सीनेट (एनआईटीईएस) ने कर्मचारियों की तरफ से पुणे में लेबर कमिश्नर के पास एक शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत में कहा गया है कि कंपनी के खिलाफ लीगल एक्शन लिया जाए।

एनआईटीईएस के जनरल सेक्रेटरी हरप्रीत सलूजा ने कहा कि परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कर्मचारियों को 22 जुलाई तक एक ईमेल का जवाब देने के लिए कहा गया था। कंपनी के प्रवक्ता ने कहा है कि बहुत सारे कर्मचारियों ने पेड लीव और अनपेड लीव पर जाने का फैसला किया है, क्योंकि इससे नौकरी चलती रहेगी और साथ ही मेडिक्लेम का फायदा मिलता रहेगा। हालांकि, उसके बाद कंपनी इन्हें निकाल देगी या क्या फैसला लेगी, इस पर अभी कुछ कहा नहीं गया है। कंपनी ने कहा है कि अगर डिमांड फिर से आती है तो कर्मचारियों को वापस बुलाया जाएगा।

मैंने गलती की और चाहता हूं इससे सभी सीख लें: शाकिब

ढाका। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की भ्रष्टाचार रोधी संहिता का उल्लंघन कर प्रतिबंध झेल रहे बंगलादेश के ऑलराउंडर शाकिब अल हसन का कहना है कि उन्होंने गलती की थी और वह चाहते हैं कि उनकी इस गलती से सभी खिलाड़ी सीख लें। पिछले साल अक्टूबर में शाकिब ने अपने ऊपर लगे आईसीसी की भ्रष्टाचार रोधी संहिता की तीन धाराओं तो तोड़ने के आरोप को स्वीकार किया था जिसके बाद उन पर खेलने से प्रतिबंध लगा दिया था। उनका प्रतिबंध इस साल 29 अक्टूबर को खत्म हो रहा है।

गोएयर लाया गोफ्लाईप्राइवेट स्कीम, चार्टर प्लेन जैसी सुविधा !

मुंबई (आरएनएस)। एयरलाइन कंपनी गो एयर ने शुक्रवार को एक खास स्कीम की शुरुआत की है, जिसे गोफ्लाईप्राइवेट स्कीम नाम दिया है। इसमें वह यात्रियों को प्राइवेट जोन ऑफर कर रहा है। इसके तहत एयरलाइन कंपनी एक सिंगल पीएनआर पर ही कई सीटें बुक करने की सुविधा दे रहा है। एयरलाइन ने कहा कि इस तरह से की गई बुकिंग में ग्राहक को पूरी प्राइवेट चार्टर फ्लाइट बुक करने की तुलना में काफी कम पैसे देने होंगे।

गोफ्लाईप्राइवेट के तहत ग्राहक ये तय कर सकते हैं कि वह कितनी सीटें और कितनी लाइनें ब्लॉक करना चाहते हैं, जिससे उन्हें प्राइवेट एरिया मिल सके। कोरोना वायरस महामारी के चलते पहले ही रेवेन्यू के संकट से जूझ रही गो एयर कंपनी तमाम तरीके आजमा रही है, जिससे वह अपनी कमाई बढ़ा सके।

गोएयर की तरफ से पड़ोस की खाली सीट डिस्काउंट रेट पर बुक करना भी कमाई बढ़ाने की एक कोशिश की है, ताकि कोरोना वायरस महामारी के इस दौर में लोग अपने आस-पास का एरिया सुरक्षित बनाते हुए यात्रा कर सकें।

विजडन ट्राफी को अलविदा, अब होगी रिचर्ड्स-बॉथम ट्राफी

लंदन। इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) और क्रिकेट वेस्ट इंडीज दोनों देशों के बीच टेस्ट सीरीज के लिए दी जाने वाली विजडन ट्राफी को अलविदा कहने पर सहमत हो गए हैं और अब इसकी जगह इंग्लैंड तथा वेस्टइंडीज के बीच अगली टेस्ट सीरीज रिचर्ड्स-बॉथम ट्राफी के लिए खेली जाएगी। विजडन ट्राफी की शुरुआत 1963 में क्रिकेट के बाइबल समझे जाने वाले विजडन के 100वें संस्करण का जश्न मनाने के लिए हुई थी। विजडन ट्रॉफी को अब लॉर्ड्स में एमसीसी म्यूजियम में रखा जाएगा। इसकी जगह अब यह सीरीज वेस्टइंडीज के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज विवियन रिचर्ड्स और इंग्लैंड के पूर्व आलराउंडर इयान बॉथम के नाम पर आयोजित की जाएगी। रिचर्ड्स ने कहा, यह मेरे और मेरे दोस्त इयान बॉथम के लिए सम्मान की बात है। मेरे लिए काफी खुशी की बात है कि जिस खेल को मैं बचपन से देखता आ रहा हूं उसका नाम मेरे ऊपर रखा जा रहा है। उन्होंने कहा, जब मुझे इंग्लैंड जाकर समरसेट का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला तो बॉथम वो पहले इंसान थे जिससे मैं मिला जो बाद में मेरे अच्छे दोस्त बन गए। हम जीवन भर के लिए दोस्त बन गए थे। रिचर्ड्स का इंग्लैंड के खिलाफ 62.36 का औसत है और उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ आठ शतक जड़े है जबकि बॉथम ने विंडीज के खिलाफ 20 टेस्ट मैच में 35.18 के औसत से 61 विकेट लिए हैं। बॉथम ने कहा, रिचर्ड्स सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज थे जिनके खिलाफ मैं खेला।

फिल्म ब्रह्मास्त्र में नजर आएंगी ऐक्ट्रेस राशी मल

डायरेक्टर अयान मुखर्जी की अपकमिंग फिल्म ब्रह्मास्त्र का दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। कोरोना वायरस और लॉकडाउन के कारण फिल्मों को आने में देरी हो रही है। फिल्म की इतनी जबरदस्त स्टार कास्ट है कि लोग बस यही चाह रहे हैं कि जल्द से जल्द यह फिल्म रिलीज हो। इसी स्टार कास्ट में एक नाम ऐक्ट्रेस राशी मल का है। ब्रह्मास्त्र अब तक की उनकी सबसे बड़ी फिल्म होगी। राशी मल ने आइटी इंजीनियरिंग की पढ़ाई की लेकिन वह ऐक्टर, सिंगर, सॉन्ग राइटर और डांसर बन गई। राशी मल ने हेलिकॉप्टर इला, डियर माया जैसी फिल्मों में काम किया है। अब वह ब्रह्मास्त्र की शूटिंग का बेसब्री से इंतजार जैसी बड़ी फिल्म में नजर आएंगी। राशी मल को अपनी अपकमिंग फिल्म ब्रह्मास्त्र की शूटिंग का बेसब्री से इंतजार है। इस फिल्म के अलावा उन्हें अपनी आने वाली फिल्म काव्य की शूटिंग का भी इंतजार है। राशी मल को ट्रैवल करने और किताबें पढ़ने का काफी शौक है। वह अब तक 34 देशों की यात्रा कर चुकी हैं। राशी मल फिल्म ब्रह्मास्त्र में अमिताभ बच्चन, रणबीर कपूर, आलिया भट्ट, जैसे बड़े कलाकारों के साथ काम करती दिखाई देंगी।

बॉबी जासूस में जलवे दिखा चुकीं सुरभि चंदना

सुरभि चंदना सोशल मीडिया लवर हैं। वह कभी अपनी तस्वीरें तो कभी वीडियोज इंस्टाग्राम पर शेयर करती रहती हैं। हाल ही शेयर की गई तस्वीरों में सुरभि का ग्लैम अवतार फैन्स को खूब भा रहा है। तस्वीरों में सुरभि ब्राउन कलर की ड्रेस में दिख रही हैं।

इन तस्वीरों के साथ सुरभि फैन्स से कह रही हैं कि वे उनका पसंदीदा कलर पूछें। तस्वीरों के साथ-साथ सुरभि चंदना के एक्सप्रेशन्स भी कमाल हैं। फैन्स उनकी हर अदा को देख क्रेजी हुए जा रहे हैं।

सुरभि चंदना ने करियर की शुरुआत टीवी शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा से की थी। इस शो में वह स्वीटी के किरदार में दिखीं। इसके बाद वह एक ननद की खुशियों की चाबी- मेरी भाभी में नजर आईं। लेकिन सुरभि को पॉप्युलैरिटी मिली टीवी शो इश्कबाज़ में अनिका का किरदार निभाकर। इसके बाद संजीवनी डॉ. इशानी अरोड़ा के रोल में भी उन्हें खूब पसंद किया गया। सुरभि चंदना बॉलिवुड में भी काम कर चुकी हैं। उन्होंने साल 2014 में बॉलिवुड में एंट्री की थी।

आज का राशिफल

मेषःआज सूर्य चंद्र के राशि परिवर्तन योग का मेष राशि को फायदा मिल रहा है।

वृषभःआज का दिन पारिवार के साथ सुख-शांति पूर्वक बीतेगा। भाग्य मेहरबान रहेगा, दोपहर तक कोई शुभ समाचार भी मिल सकता है।

मिथुनःसूर्य की अनुकूलता का लाभ आप आज पा सकते हैं। पिता से आशीर्वाद लेकर नया काम करना शुभ रहेगा।

कर्कःराशि स्वामी चंद्रमा की उत्तम स्थिति एवं राशि से पांचवें घर में गुरु का संचार अकस्मात बड़ी मात्रा में धन की प्राप्ति करवा सकता है, अवसर पर नजर रखें। छात्रों के लिए भी दिन प्रगतिदायक है, शिक्षा में रुचि रहेगी।

सिंहःसराकरी क्षेत्र से जुड़े क्षेत्रों में आपको मेहनत के अनुसार अच्छी सफलता मिलेगी। संतान के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को लेकर आपको कुछ सक्रिय रहना पड़ सकता है।

कन्याःआज कार्यक्षेत्र में तत्परता से लाभ होगा। स्वजनों से सुख मिलेगा। पारिवारिक जीवन में आपसी सहयोग और मंगल कार्यों की खुशी होगी। रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा।

तुलाःआज शिक्षा व प्रतियोगिता के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के योग हैं। आय के नये स्रोत बनेंगे, वाक्पटुता आपको विशेष सम्मान दिलाएगी।

वृश्चिकःआज आपका आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। धन, सम्मान, यश, कीर्ति में वृद्धि के लिए दिन उत्तम है। रुका हुआ कार्य सिद्ध होगा-प्रियजनों से मुलाकात होगी।

धनुःआज गृहोपयोगी वस्तुओं पर धन खर्च होगा। सांसारिक सुख भोग के साधनों में वृद्धि होगी। आधीनस्थ कर्मचारी या किसी संबंधी के कारण तनाव बढ़ सकता है।

मकरःआज व्यावसायिक क्षेत्र में मन के अनुकूल लाभ होने का हर्ष होगा। आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ होगी। व्यवसाय परिवर्तन की योजना बन रही है।

कुंभःपारिवारिक जीवन में आपको थोड़ी परेशानी हो सकती है। सेहत को लेकर चिंतित होंगे।

मीनःवैवाहिक जीवन के लिए दिन आनंददायक रहेगा। आज किसी कारण से आपको यात्रा करनी पड़ सकती है। कारोबार में उन्नति और लाभ से खुशी होगी।

मॉनसून में खीरा बनाएगा चेहरे को ग्लोइंग, ऐसे करें इस्तेमाल और 10 मिनट में देखें कमाल

मॉनसून में उमस और गर्मी बढ़ जानें से स्किन चिपचिपी और ऑयली हो जाती है. वहीं घर का काम करते वक्त पसीने से त्वचा और भी खराब होने लगती है. ऐसे में चेहरे को कूल-कूल फेस पैक की जरूरत पड़ती है. इस ठंडे फेस पैक के इस्तेमाल से त्वचा एक बार फिर से रिफ्रेश लगने लगती है. साथ ही त्वचा को इस मास्क से ठंडक भी मिलती है. इससे त्वचा का खोया हुआ निखार भी वापस आता है. आपको ये कूल कूल फेस पैक खीरे से बनाना पड़ेगा. मॉनसून में खीरा चेहरे को ग्लोइंग बनाता है. खीरे से स्किन पर ताजगी नजर आने लगती है. आपको घर पर इस पैक को बनाने के लिए खीरे के साथ दो और चीजों की जरूरत पड़ेगी. इस फेस पैक का इस्तेमाल कर आप अपने डल चेहरे को फिर से रिफ्रेश कर सकते हैं. आइए जानते हैं कि घर कैसे बनाएं ये फेस पैक और कैसे करें इसका इस्तेमाल.

फेस पैक बनाने के लिए सामग्री-

-एक मीडियम साइज का खीरा

-10 पुधीने की पत्तियां

-एक बड़ा चम्मच शहद

ऐसे बनाएं फेस पैकखीरे को मोटी स्लाइस में काट लें और 2 स्लाइस को प्यूरी बनाने के लिए साइड में रख दें.

-खीरे को अच्छे से ब्लैंड कर लें. शहद और पुधीने की पत्तियों को इसके साथ अच्छे से ब्लैंड करके एक गाढ़ा पेस्ट तैयार कर लें और फिर इसे अपने चेहरे पर लगाएं.

-अब खीरे के दो टुकड़ों को अपनी आंखों पर लगा कर रखें. इससे आपके डार्क सर्कल ठीक होंगे और साथ ही आंखों की थकान भी दूर होगी। इस पेस्ट को 10 मिनट के लिए अपने चेहरे पर लगा कर रखें और फिर साफ पानी से मुंह धो लें. आपको असर साफ नजर आएगा.

खीरे के फेस पैक के फायदे-शहद में एंटी-बैक्टीरियल प्रोपर्टीज होती हैं, जिससे ऑयली स्किन की समस्याएं दूर होती हैं. साथ ही पिंपल्स की समस्या से भी छुटकारा मिलता है।

शब्द सामर्थ्य- 97

बाएं से दाएं

1. कतार, क्रम, पांत 2. लज्जत, जायका 4. कारण, वजह 7. सुंदर प्रतीत होना, सुखद होना 8. घोड़े आदि का मल 9. अक्सर, ज्यादातर 10. चक्की में पीसना, मसलना, कुचलना 12. धनुष, फौजी टुकड़ी 13. आभूषण, जेवर 15. लहरों का चक्कर, जलावर्त, भ्रमर 17. बायां, विरुद्ध 18. गाना, नगमा 19. लाचार, विवश 22. नमन, प्रणाम 25. चौकी, थाना 26. इकरार, समझौता, ठेका 27. अधिकार होना, सामर्थ्य होना (मुहा.)।

ऊपर से नीचे

1. एक प्रदेश जिसकी राजधानी चंडीगढ़ है 2. हविर्दान के समय उच्चारित एक शब्द, भष्म 3. दन-दन करते हुए 5. बलशाली, बलवाला 6. परिवर्तित करना, पहले से भिन्न हो जाना 7. चांद, चंद्रमा, रजनीश 11. अप्रिय, अरुचिकर 14. मैं का बहुवचन 15. भंगेड़ी, भंग करने वाला, झाड़ू लगाने तथा मैला साफ करने वाला 16. मातृभूमि, स्वदेश 19. मक्खन, माखन 20. बुढ़ापा, धन, ज्वर 21. टालना, हटाना, बहाना करके हटाना 23. सीमा, हद 24. सौ का पाचंवा हिस्सा 25. घोड़े के पैरों में लगाने का लोहे का टुकड़ा, पौधे आदि का डंठल।

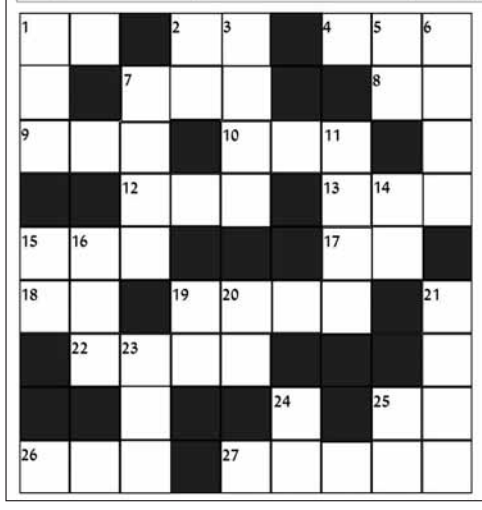

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 96 का हल

वि	ज	य		ब	नि	या		दे
वा		ती	त	र		रा	जी	व
ह	मा	म		स	प	ना		ता
	न				टा			
दा	व	त		वि	ना	श		अ
य		ह	त्या			ह	र्जा	ना
रा	ह	त		न	ज	र		व
	वा				मी		ना	श्य
दु	ला	रा		जा	न	की		क

सू-दोकू- 97

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है, जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम, कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.96 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6